ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

# ''कृषि विस्तार एवं भूमि उपयोग''

डॉ0 राजेश कुमार मिश्रा
भूगोल विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय
टैगोर महाविद्यालय, सूरतगढ़।

**प्रस्तावित शोध की परिचायात्मक विश्लेषणः–**

पंजाब की पहचान पांच नदियों की जमीन और इसके पकवानों इतिहास और संस्कृति की चकित कर देने वाली विवधता के लिए हैं। चमकदार हरी उर्वर खेती की जमीन पानी की झिल–मिलाहट, आकाश में नीले रंग के विभिन्न प्रकार आपको कभी खत्म न होने वाले जीवतं का अहसास कराती हैं। पंजाब की चमत्कारी धरती पर उत्साही, सक्रीय और हमेशा खुश रहने वाले लोग रहते हैं, जो आपका खुली बाहों और चेहरे पर मुस्कान से स्वागत करते है, पुरूष सतरंगी पगड़ी पहनते हैं वहीं महिलाएं बहुरंगी परिधान, चुड़िया रिबन और दुपट्टे पहनती हैं। यहां का संगीत भंगड़ा भी इस रंगबिरी और जिंदादिल संस्कृति को बढ़ावा देता हैं।

राज्य के आकर्षक शहर इसके पर्यटन स्थलों को आपस में जोड़ते हैं इनमें शामिल हैं, मनमोहक स्मारक, गुरूद्वारे पवित्र देवस्थल, मन्दिर आश्रम चौड़ी झिलें, अभ्यारण जो संग्रहालय और प्रवासी पक्षियों की कई दुर्लभ प्रजातियों व जानवरों के घर हैं। पर्यटकों के लिए प्राचीन सभ्यता, समद्व–संस्कृति, मुंह में पानी ला देने वाले पकवानों और बेहतरीन खरीददारी के लिए यह एक आदर्श पर्यटन स्थल हैं।

**प्रस्तावित शोध का उद्देश्य :–**

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एवं देश का आर्थिक विकास वहां की जनसख्या के वितरण, घनत्व एवं लोगों के जीवन स्तर पर निर्भर करता है। प्राकृतिक साधन निष्क्रिय होते है किन्तु मानव ही प्राकृतिक सांधनो का उपयोग करता है। यदि क्षेत्र में पाये जाने वाले संसाधनों का ठीक प्रकार से दोहन किया जाये तो विकास सही ढंग से हो जाता है और यदि दोहन


Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

तीव्र गति से किया जाये तो विकास रूक जाता है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब मानव संसाधन की वृद्धि पर नियन्त्रण हो सके। यदि किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उत्पादन के अनुरूप नहीं होती हैं तो वहां के निवासियों का जीवन स्तर नीचे गिरने लगता है एवं जनसमस्याएं पनपती है।

जनसख्यां वृद्धि उत्पादन के अनुरूप नहीं होती है तो वहां के निवासियों का जीवन स्तर नीचे गिरने लगता है एवं जनसमस्याएं पनपती है। जनसंख्या में श्रमपूर्ति, कार्यक्षमता, कार्यक्षमता, कार्यकुशलता, साक्षरता, स्वास्थ्य आदि सभी तथ्य मानव शक्ति के रूप में प्रभाव दिखाते हैं। क्षेत्र की जनसंख्या का कृषि के सन्दर्भ में अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि क्षेत्र की लगभग दो तिहाई से अधिक कार्यशील जनसंख्या वृद्धि में संलग्न है। अतः क्षेत्र की 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। जिले में जनसंख्या कृषि कार्यो में संलग्न है। अतः प्रति इकाई भूमि पर उत्पादन में वृद्धि भी जरूरी है। कृषि में आधुनिकीकरण के कारण प्रति वर्ष उत्पादन भी विकास की ओर उन्मुख है। कृषि उत्पादन में वृद्धि का कारण कृषि में नई तकनीकों का प्रयोग, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार एवं नये कृषि साधनों का प्रयोग हैं। कृषि में नई तकनीकों का प्रयोग, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार एवं नये कृषि साधनों का प्रयोग है।

**प्रस्तावित शोध के सोपान :–**

देश की बढ़ती हुई आबादी की खाद्य समस्या को हल करने के लिए सघन खेती अति आवश्यक हैं। इस विधि से एक ही खेत में एक वर्ष में कई फसलें ली जा सकती हैं। इसके लिए उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशी दवा तथ पानी की समुचित व्यवस्था है साथ–साथ समय पर कृषि कार्य करने के लिए आधुनिक कृषि यंत्रो का प्रयोग भी अति आवश्यक हैं। कृषि क्षेत्र में प्रायः सभी कार्य कृषि यंत्रो से करना सम्भव हैं, जैसे जुताई, बुवाई, सिंचाई, कटाई, मड़ाई एवं भंडारण आदि।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि में यंत्रीकरण का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान हैं। यंत्रीकरण से उत्पादन एवं उत्वादकता दोनों बढ़ती हैं यंत्रीकरण से कम समय में अधिक कार्य कुशलता के साथ किये जा सकते हैं। कृषि में यंत्रीकरण से निम्न लाभ हो सकते हैं।

1. कृषि उत्पादकता में 12–34 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो सकती हैं।


Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

2. बीज सह खाद ड्रिल से 20 प्रतिशत बीज की तथा 15–20 प्रतिशत खाद की बचत होती हैं।

3. फसल सघनता को 05–12 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता हैं।

4. कृषकों की कुल आमदनी 30–50 प्रतिशत तक बढ़ायी जा सकती हैं।

हमारे फरीदकोट श्री मुक्तसर साहिब प्रदेश में भी कृषि यंत्रो का प्रयोग दिनों–दिन बढ़ता जा रहा हैं। यहाँ के किसान मजदूरों की कमी की समस्या हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक यंत्रो का प्रयोग करने लगे हैं।

**प्रस्तावित शोध का महत्व :–**

मानवीय अर्थव्यवस्थाओं में कृषि का विषेष महत्व है। जीविकोपार्जन की प्रक्रिया में आखेट, पषुपालन, एवं वन्य संसाधन पर दीर्घकाल तक निर्भरता के उपरान्त मनुष्य धीरे–धीरे कृषि विधियों को अपनाने लगा और कालान्तर में वही इन्हीं के द्वारा जीविकोपार्जन करने लगा। आज मानव के भरण पोषण में कृषि का प्रमुख योगदान है। इसी पर आधारित अन्य व्यवसाय भी मानवीय क्रियाओं से जुड़कर उसकी आधुनिक सभ्यता के प्रतीक बन गये हैं। कृषि के प्रचलन ने मनुष्य की विभिन्न आवष्यकता की पूर्ती की है। कृषि कार्य से उसके यायावर जीवन में स्थायित्व आया, उसे गृह निर्माण करना पड़ा, तथा कृषि में पषुषक्ति का सहारा लेना पड़ा। इस प्रकार धीरे–धीरे सभ्यता का विकास हुआ एवं मनुष्य ने पषुचारण युग से वर्तमान अन्तरिक्ष युग में प्रवेष किया।

कृषि का श्रीगणेष भी मानव सभ्यता की भांति ही अति प्राचीन है, मनुष्य ने आखेट, वन क्रिया कलाप एवं पषुपालन के उपरान्त ही कृषि कार्य प्रारम्भ किया। पषुचारण और कृषि कार्य दीर्घकाल तक साथ–साथ किन्तु अर्थव्यवस्था रूप में चलते हैं, धीरे–धीरे कृषि कार्य प्रधान बनने लगा, कृषि का प्राथमिक रूप बदलता रहा और आज वह अपने पूर्ण आधुनिक विकसित एवं व्यापारिक रूप में दिखाई देती है। निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के कारण मनुष्य ने जंगलों को साफ किया और उसे कृषि में परिवर्तित कर दिया, धीरे–धीरे नदी, घाटियों के अतिरिक्त पठारों व मरूभूमियों में भी कृषि कार्य फैलता गया। गांवों व नगरों का जाल सा बिछ गया और भूमि में एक निष्चित क्षेत्र से अधिक उत्पादन करने का प्रयास किया जाने लगा।

**प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष :–**


Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

अध्यनन क्षेत्र की मुख्य अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होने के कारण यहां भू–उपयोग के साथ–साथ शस्य गहनता में भारी बदलाव हुआ है। क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा विभाजित भूमि उपयोग अपनाते हुए भूमि उपयोग को 5 वर्गों में विभाजित किया गया है। भूमि उपयोग का उपरोक्त वर्गीकरण भारत सरकार द्वारा स्वीकृत वर्गीकरण के अनुसार है। यह वर्गीकरण मूलतः कृषि उन्मुख है तथा कृषि भूमि उपयोग के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी है।

किसी भी प्रदेष के भूमि उपयोग का प्रतिरूप अनेक भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और आर्थिक कारकों से प्रभावित रहता है। इसका निर्धारण में ऐतिहासिक और राजनीतिक कारक भी महत्वपूर्ण होते है। दोनों जिलो में नहरी सिंचाई जल उपलब्ध होने से यहां जनसंख्या में भी उत्तरोतर वृद्धि हुई है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :–**

अमालकर (2014) ''एग्रीकल्चर लैण्ड यूज इन एरिडवैस्टर्न राजस्थान रिसोर्स एक्सपलोइटेशन एण्ड इमरजिंग इश्यूज''

असवा, सुशीला (1991) राजस्थान में सिंचाई का विकास,उदयपुर और भीलवाड़ा के संदर्भ मे विश्लेशण शोध ग्रंथ, अप्रकाशित अर्थषास्त्र विभाग, राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर।

डेली, एस. ई. (1989) सतत् विकासः फ्रोम कॉन्सेप्ट एण्ड थ्यौरी टुवार्डस ऑपरेशनल प्रिंसिपल्स पापुलेशन एण्ड डवलपमेंट रिव्यू, वांशिगटन

गुर्जर आर. के. (1987) : इरिगेशन फॉर एग्रीकल्चर मोडर्नाइजेशन, सांइटिफिक पब्लिकर्स, जोधपुर।

गुर्जर आर. के. (1992) ''मरुस्थलीय पारिस्थितिकी पर सिंचाई का प्रभाव'' रावत पब्लिकेशन, जयपुर।


Copyright © 2020 Authors